ई–बुलेटिन

कृषिउद्यमी

प्रतीयमान अनुभव को बांटने वाला मंच

खंड – VIII अंक –III

जून, 2016

प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि

इस अंक में:

- "आधुनिक डेयरियों का प्रबंधन" पर सार-संग्रह प्रकाशित
- इस माह के कृषि उद्यमी: श्री सेंथिल कुमार पुदुच्चेरी, तमिलनाडु
- इस माह का संस्थान: यूनिवर्सिटी ऑफ हार्टिकल्चरल साइन्सेस (यू एच एस) बागल कोट, कर्नाटक
- नेशनल एग्रिकल्चर मार्केट (एन ए एम)

कृषिउद्यमी की मुफ्त हेल्पलाइन का उपयोग करें

1800 –425-1556

" कृषि उद्यमिता एक ऐसा प्रतीयमान मंच है जहां कृषि उद्यमियों, बैंकरों, कृषि व्यवसाय कंपनियों, नोडल प्रशिक्षण संस्थानों, विस्तार कार्यकर्ताओं, शिक्षाशास्त्रियों, अनुसंधानकर्ताओं तथा कृषि व्यवसाय चिंतकों, जो देश में कृषि उद्यमिता विकास के लिए कार्य कर रहे हैं, के अनुभवों को सबके साथ बांटा जाता है।

"आधुनिक डेयरियों का प्रबंधन" पर सार-संग्रह प्रकाशित

"आधुनिक डेयरियों के प्रबंधन" पर सार-संग्रह का औपचारिक विमोचन डॉ. अनिल कुमार श्रीवास्तव, निदेशक एवं उप-कुलपति, राष्ट्रीय दुग्ध अनुसंधान संस्थान (एन डी आर आई), करनाल द्वारा 25 जून 2016 को किया गया। यह सार-संग्रह का विमोचन 21 से 25 जून, 2016 के दौरान एन डी आई, करनाल में एग्रि-क्लिनिक्स एवं एग्र-बिजिनेस योजना के तहत स्थापित एग्रिप्रन्यूरों हेतु "आधुनिक डेयरियों के प्रबंधन" पर आयोजित पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के दौरान किया गया। उन्होंने इस सार-संग्रह के बारे में बताते हुए कहा कि इसमें डेयरी फार्मिंग और दुग्ध प्रसंस्करण गायों का चयन, डेयरी फार्मो का प्रबंधन, दुधारू पशुओं की पोषक आवश्यकता, प्रजनन कार्यक्रम तथा दुधारू पशुओं की स्वास्थ्य सुरक्षा से संबंधित सभी विषयों को समाहित किया गया है। डॉ. श्रीवास्तव ने दुगध उत्पादन को बढ़ाने में एग्रिप्रेन्यूरों की भूमिका तथा उन्हें तैयार करने में मैनेज की भूमिका की सराहना की। इसके अलावा उन्होंने राष्ट्र में खाद्ध एवं पोषण सुरक्षा तथा राष्ट्रीय खाद्ध सुरक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति में दुग्ध उत्पादन एवं प्रसंस्करण की सहायता एवं उनकी सुरक्षा पर चर्चा करते हुए हाईब्रिड गाँयों से प्राप्त दुध का देसी गाँयों से प्राप्त होने वाले दुध की गुणवत्ता की तुलना की। इस कार्यक्रम का संचालन डॉ. गोपाल संखला, वरिष्ठ वैज्ञानिक द्वारा किया गया। डॉ. आर. उन्नि कृष्णन, कन्सलटेंट, मैनेज ने इस सार .संग्रह को प्रकाशित करने पर एन डी आर आई, करनाल को बधाई दी और कहा कि यह सार-संग्रह डेरी फार्मिंग में लगे व्यक्तियों के लिए एक डेस्कटॉप गाईड तथा रेडी रेकेनर के रूप में कार्य करेगा।

एनडीआरआई, करनाल में आरटीपी के दौरान जारी की 'मॉडर्न डेयरीज का प्रबंधन' पर संग्रह

‘‘पैसे भी पेड़ों पर उगाये जा सकते है’’

“पैसे वास्तव में पेड़ों पर उगाये जा सकते है” यह श्री एस. सेंथिल कुमार (34) कृषि विज्ञान में मास्टर, पुदुच्चेरी, तमिलनाडु का कथन है। उन्होंने अपनी सलफ उद्धम पहले चरण पर कसौरनिया को चुना। कसौरनिया सतत हरित छोटे-छोटे पेड़ है जो लगभग 35 मी. लंबाई तक बढ़ते है और कृषि वानिकी में मशहूर है। तीव्र गति से बढ़ने वाली यह प्रजाति तटीय रेतीले, उच्च पर्वतीय, उष्णकटिबंधीय, अर्द्ध शुष्क इलाकों के लिए उपयुक्त है। 15 से 25 मीटर की औसत उंचाई तक बढ़ाने में, कसौरनिया में वायुमंडलीय नाईट्रोजन को खींचने की शक्ति होती है। यह इंधन की लकड़ी का बहुत बड़ा श्रोत है और इसे पेड़ की लकड़ी पेपल पलप बनाने के लिए उपयुक्त है, लेखन, मुद्रण एवं आवरण कागज बनाने के लिए कच्चा माल है। इसका विपणन चार रूपों में किया जाता है। स्टम्पस, मोटे टहनियों, नाजुकी टहनियों तथा 1 मीटर लंबाई के नीडिल्स और बिल्लेडस बनाने के लिए भी उपयुक्त है। श्री सेंथिल कुमार याद करते हुए कहते है कि ये पेड़ उन्हें महीने में 30,000 से 60,000 हजार के बीच आमदनी दिलाती है। पढ़ाई पूरा करने के बाद श्री सेंथिल कुमार एग्रि-इनपुट विपणन के लिए एक प्राइवेट कंपनी में नियुक्त हुए थे। अधिकाधिक दौरे व्यापारिक लक्ष्यों के कारण वे शक्तिहीन होते गए और स्वरोजगार की ओर प्रेरित हुए। 2015 में उन्होंने नौकरी छोड़ कर एक छोटा सा कसौरनिया का नर्सरी प्रारंभ कियाा इसी दौरान उन्होंने अपने मित्रों के द्वारा एग्रि-क्लिनिक्स एवं एग्रि-बिजिनेस केंद्र योजना के बारे सुना। योजना के बारे में अपने मित्रों की उत्तम प्रतिपुष्टि सुनने के बाद वे इस कार्यक्रम में प्रवेश लेने के लिए प्रेरित हुए। श्री सेंथिल कुमार प्रशिक्षण हेतु वालेंटरी एसोसिएशन फर पीपुल सर्वीस (VAPS), पुदुच्चेरी में 2016 में प्रवेश लिए। प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद उन्हें लगा कि इसके द्वारा अपने व्यापार में वाणिज्यिक तौर पर और आगे बढ़ाने में मूल्य जोड़ होगा। प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद उन्होंने अपनी कंपनी “संगीता-हाई-टेक-नर्सरी” के नाम से रू.5 लाख का निवेश डालकर पंकीकृत कराया और आधे एकड़ जमीन में मातृ पौधों को रोपा। अंकुरों को बढ़ाने के लिए उन्होंने एक वर्ष पुराने वृक्षों के टहनियों का चयन कर उन्हें जड़ उत्प्रेरण हारमोन धुलाव (द्रव) में दो मिनट डुबोकर मटकों में रोपा है। उन्हें 50 दिनों तक शेड नेट के छाँव में रखा और उन पौधों को बेचा। 72 पौधों सहित एक ट्रे को उन्होंने रू. 180/- के दर से बेचा। उन्होंने इस कंपनी के साथ रजिस्टर किए 50 किसानों तथा कसौरनिया बढ़ाने के लिए एक नेटवर्क स्थापित किया।

कृषि उद्यमी, श्री सेंथिल कुमार, पुदुच्चेरी, तमिलनाडु

कैसुरियाणा पौधों का सख्त करना

पौधों के लिए कोको पिट एवम ट्रे

श्री सेंथिल कुमार का कहना है कि तमिलनाडु, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में अधिक से अधिक पेपर मिल होने के कारण उनके मिलों के लिए रॉ-मटीरीयल प्राप्त करने के इस लकड़ी की माँग बहुत ज्यादा है। “संगीता-हाई-टेक-नर्सरी” न केवल कसौरनिया के पौधों का मशहूर बना रहा है परंतु क्रॉसान्र्ड, गुलाब और अन्य अंकुरों को भी प्रोत्साहन देता है। आज उसका टर्नओवर रू. 10,000 लाख है और उनके साथ व्यापर को बढ़ाने के लिए दो ग्रामीण युवक कार्य कर रहे हैं। मुस्कुराते हुए श्री सेंथिल कुमार का कहना है कि “मेरा लक्ष्य भविष्य में 5 एकड़ की भूमि में देशी दुधारू पशुओं के साथ एकीकृत कृषि करना है”। आगे उनका यह भी कहना है कि कृषि केवल एक शारीरिक कार्य नहीं है बल्कि ध्यान केंद्रित कर सतर्कता से करने वाल काम है, साथ ही हमें सफलता पाने के लिए सही समय पर सही निर्णय लेने की भी आवश्यकता है।

श्री एस. सेंथिलकुमार

संगीत ही-टेक नुर्सरी -१०, मारूड़ी श्रीनिवास नगर, पांडिचेरी, इ- मेल : sskp2021@gmail.कॉम

मोबाइल : +91 9843500990

डॉ. वाई. के. कोटिकल

नोडल अधिकारी

नाम एनटीआई: यूनिवर्सिटी ऑफ हार्टिकल्चरल साइन्सेस (यू एच एस) बागल कोट

पता: निदेशक विस्तार , यूनिवर्सिटी ऑफ हार्टिकल्चरल तुरल साइन्सेस, उदयनगरी (सीमिकेरि क्रॉस के नजदीक) नवानगर, बागल कोट – 587104

फोन सं.:020- 08354-230101

मो.नं. : 9480696381

ई-मेल:

de@uhsbagalkot.edu.in

आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों की संख्या : 1

प्रशिक्षित उम्मीदवारों की संख्या: 53

कर्नाटक का हॉर्टिकल्चर यूनिवर्सिटी ए सी व ए बी सी योजना के कार्यान्वयन में मैनेज के साथ एक नया सहभागी संस्थान होगा

यूनिवर्सिटी ऑफ हार्टिकल्चरल साइन्सेस (यू एच एस) बागल कोट के अधीन व हॉर्टिकल्चर महाविद्धालय है जो डिग्री प्रदान करते है जिसमें हर वर्ष लगभग 450 स्नातक तथा 150 स्नातकोत्तर की उपलब्धियाँ होगी। यू एच एस, बागलकोट भी हर वर्ष 50 डिप्लोमा की उपलब्धियाँ बागवानी में तथा 30 स्नातकोस्तर डिप्लोमा की उपलब्धिँ भी प्रदान कर रही है। अधिकांश स्नातक एवं डिप्लोमा प्राप्त कर्ता वर्तमान में कृषि एवं कृषि व्यापार की ओर रूचि दिखा रहा है। उनकी उद्धमिता कौशलों को साथ देने तथा उन्हें सफल उद्धमी बनने के लिए नोडल प्रशिक्षण संस्थान के रूप में यू एच एस ने एग्रि-क्लिनिक्स एवं एग्रि बिजिनेस केन्द्र योजना प्रारंभ करने की योजना बनायी है। यह कार्यक्रम न केवल उनके पूर्व विद्धार्थियों के लिए लाभदायक है परंतु वहाँ के आस पास रहने वालों के लिए कृषि के मुख्य एवं मांग सेवाएं प्रदान करने में भी सहायक सिद्ध होगा। यह यूनिवर्सिटी किसानों, विभागीय अधिकारियों, उद्धमियों इनपुट डीलरों, निजी कंपनियों के कर्मचारियों, एन जी ओ, एस एच जी के रूचि रखने वाले कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है। यह प्रशिक्षण केन्द्र शिक्षण दौरे, किसान – वैज्ञानिक चर्चा सत्रों का आयोजन करता है साथ ही विश्वविद्धालयों एवं सरकारी एजन्सियों द्वारा आयोजित कृषि मेलों में भी भाग लेता है। विस्ता निदेशालय भी अपने प्रशिक्षण केन्द्र के द्वारा किसानों को दौरों पर ले जाता है। हर वर्ष विश्वविद्धालय एक मेगाा मेला "उद्धान मेला" का आयोजन मुख्य आहाता में रीसर्च स्टेशनों में फील्ड रेसा पर वर्तमान में विकसित उत्पादों तथा तकनीकियों को दिखाते है। ताकि उनमें जागरूकता उत्पन्न हो। प्रदर्शनी में हर्टिकल्चर, पशुओं का, सीधा कृषि पर फील्ड डेमानिस्ट्रेनिंग, तकनीकी परामर्शी सेल, मशीनरी व उपकरण प्रदर्शनी, किसान से किसान बात-चीत पौध रोपण समग्री तथा बीज ब्रिक्री काउंटर इत्यादि समाहित है। नोडल ऐनिंग इन्स्टिट्यूट ऑफ हॉर्टिकल्चर साइन्सेस प्रारंभ हुआ। ए सी ए बी सी का प्रथम बैच प्रशिक्षण 13 जुलाई, 2016 को विस्तार तेता व एसोसिएट नोडल अधिकारी डॉ. एस शशिकुमार ने विस्तार निदेशालय के विशिष्ट अतिथियों, प्रशिक्षार्थयों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया। मैनेज न यू एच एस में कार्यक्रम की सफलता की शुभकामनाएं दी।

डॉ वाय. के. कोटिकल, प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए

नेशनल एग्रिकल्चर मार्केट (एन ए एम)

नेशनल एग्रिकल्चर मार्केट (एन ए एम) मैन-इंडिया इलेक्ट्रानिक ट्रेडिंग पोर्टल है जो वर्तमान कृषि उत्पादन विपणन समिति (APMC) मंडियों का नेटवर्क बनाती है ताकि कृषि उत्पादनों के लिए एकीकृत राष्ट्रीय बाजार सृजन कर सकें। एन ए एम पोर्टल सभी ए पी एम सी संबंधी सूचना एवं सेवाओं के लिए सिंगिल विन्डों सर्वीस प्रदान करती है। इसमें माल आगमन एंव दर, खरीदी व बिक्री ऑफर, ट्रेड आफरों के प्रति प्रतिक्रिया दिखाने का प्रावधान आदि अन्य सेवाओं में सम्मिलित है। हालॉकि कृषि उत्पादन की आवाजाही निरंतर मंडियों के माध्यम से होते रहती है, ऑनलाईन व्यापार लेदेन के खर्चे को कम करती है और सूचना विसंगतियों को दूर करती है। कृषि विपणन का प्रशासन राज्य सरकारों के द्वारा उनके कृषि-बाजार विनियमों के अनुसार किया जाता है, जिसका नियंत्रण अलग-अलग कृषि उत्पादन मार्केटिंग समिति (APMC) द्वारा किया जाता है जो अपना विपणन विनियम जारी करता है (शुल्क सहित) । एक ही राज्य में, बाजारों का यह बटवारा कृषि उत्पादों का थोक मार्केट क्षेत्र से दूसरे मार्केट क्षेत्र जाने में भी दिक्कतें उत्पन्न करती है और कई हाथों से गुजरने के कारण ओर मंडियों के कई स्तरों के शुल्क अदा-करते-करते ग्राहकों तक उत्पादन पहुँचने तक दरों में वृद्धि कर देती है ओर किसानों को भी कोई लाभ नहीं मिलता। एन ए एम राज्य एवं राष्ट्र स्तर पर ऑनलाईन एकीकृत बाजार का सृजन करने के माध्यम से विपणन प्लैटफार्म के द्वारा एकीकृत बाजार का सृजन करने के माध्यम से इन चुनौतियाँ समाधन प्रस्तुत करता है और एकता की वृद्धि करता है, सभी एकीकृत बाजारों की प्रक्रियाओं में समरूप असमनताओं को दूर करता है और वास्तविक डिमांड सफाई के आधार पर वास्तविक दर का निर्णय कर नीलामी की प्रक्रिया में पारदर्शिता को बढ़ावा देता है। यही नहीं बल्कि किसानों के लिए अपने उत्पाद के गुणवत्ता के अनुसार दर निर्णायन, राष्ट्र स्तर पर सभी बाजारों में लेन-देन करना, ऑनलाईन भुगतान को सरल बनाता है और ग्राहको को अनुकूल दर पर उत्तम गुणवत्ता के उत्पादों को उपलब्ध कराता है। जो राज्य/सं.रा-क्षे. ई-प्लैटफार्म से 585 नियंत्रित बाजारें से जुड़ना चाहता है ऐसे में एन ए एम स्थापित किया गया है। स्माल फार्मर्स एग्रि-बिजिनेस कन्सोरशियम क्रियान्वयन एजेन्सी के रूप में नाम का परिचालन कर रहा है जिसका तकनीकी समर्थन स्ट्राटजिक पार्टनर करता है। मार्च 2017 तक 400 मंडियों का समेकन किया जाएगा। कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग राज्यों के लिए साफ्टवेयर तथा उसके कस्टमाइजेशन संबंधी व्यय वहन करेगा और निशुल्क प्रदान किया जाएगा। डैक व एफ डब्ल्यू (DAC & FW) एक मुश्त निर्धारित दर को अनुदान के रूप में प्रदान करेगा जिसकी सीमा रू.30,000 लाख प्रत्येक मंडी होगा (निजी मंडियों के अलावा) जो 585 नियंत्रित मंडियों के उपकरणों / इन्फ्रास्ट्राक्चर तथा ई-मार्केट स्थापित करने के प्लेट फार्म के लिए व्यय किया जाएगा। यह परियोजना जहाँ भी प्रारंभ होगी वहाँ के राज्य सरकार ए पी एम सी के नाम का सुझाव देंगे। एन ए एम की अधिक जानकरी के लिए वेबसाईट देखें http://www.enam.gov.in या सेल फोन सं. 18002700224 पर संपर्क करे।

www.agriclinics.net वह पोर्टल है जो एसी तथा एबीसी योजना के बारे में सूचना प्रदान करता है। यह पोर्टल पात्रता मानदंडों, प्रशिक्षण संस्थानों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सहायता कार्यों, वित्त विकल्पों तथा भावी उद्यमियों को सब्सिडी प्रदान करने के संबंध में अद्यतन जानकारी देता है।यह वेबसाइट स्थापित कृषि नव उद्यमों, लंबित परियोजनाओं, संबंधित योजनाओं के ब्यौरों से संबंधित सूचना तथा राज्य सरकारों, कृषि विश्वविद्यालयों, बैंकों, प्रशिक्षण संस्थानों तथा कृषि उद्यमियों के लिए उपयोगी अन्य सूचना भी प्रदान करती है।

AGRICLINICS & AGRIBUSINESS CENTRES
BETTER FARMING BY EVERY FARMER

कृषि उद्यमी उद्यमवृत्ति विकास केंद्र (सीएडी),
राष्ट्रीय कृषि विस्तारण प्रबंध संस्थान (मैनेज,)राजेन्द्रनगर, हैदराबाद-500 030, भारत
ई-मेल: indianagripreneur@manage.gov.in

"कृषि उद्यमी " श्रीमती वी.उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, मैनेज द्वारा प्रकाशित है।
मुख्य संपादक : श्रीमती वी. उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, मैनेज
संपादक : डॉ. पी. चन्द्रशेखर, निदेशक (कृषि विस्तार),डॉ सरवनन राज निदेर्शक (कृषि विस्तार)
सहायक संपादक : डॉ. लक्ष्मी मूर्ति, श्रीमती. ज्योति सहारे
हिन्दी अनुवाद : डॉ. के. श्रीवल्ली